I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

उच्च शिक्षा में आदिवासियों की भागीदारी-झारखंड के विशेष संदर्भ में

माया कुमारी [1*], डॉ. शारदा कुमारी [2]

[1] शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, वाई.बी.एन यूनिवर्सिटी, रांची, झारखंड, भारत

[2] शोध निर्देशिका, सहायक प्राध्यापक, वाई.बी.एन यूनिवर्सिटी, रांची झारखंड, भारत

Corresponding Author: * माया कुमारी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21374963

सार

उच्च शिक्षा किसी भी समाज के बौद्धिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है। झारखंड के विशेष संदर्भ में आदिवासी समाज की उच्च शिक्षा में भागीदारी का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि पिछले दो दशकों में इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। संवैधानिक प्रावधानों, आरक्षण नीति, छात्रवृत्ति योजनाओं, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों, जनजातीय छात्रावासों तथा राज्य एवं केंद्र सरकार की विभिन्न शैक्षिक योजनाओं के परिणामस्वरूप जनजातीय विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा तक पहुँच में वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में आदिवासी छात्र-छात्राएँ कला, विज्ञान, वाणिज्य, चिकित्सा, अभियंत्रण, कृषि, प्रबंधन, विधि तथा शोध जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं।

इसके बावजूद उच्च शिक्षा में उनकी भागीदारी अभी भी अनेक चुनौतियों से प्रभावित है। आर्थिक अभाव, भौगोलिक दुर्गमता, गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा का अभाव, भाषाई कठिनाइयाँ, डिजिटल संसाधनों की सीमित उपलब्धता, छात्रावासों की कमी तथा पारिवारिक सामाजिक परिस्थितियाँ उच्च शिक्षा तक पहुँच में प्रमुख बाधाएँ हैं। विशेष रूप से दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय स्तर पर प्रतिस्पर्धी वातावरण के अनुरूप स्वयं को स्थापित करने के लिए अतिरिक्त संघर्ष करना पड़ता है। जनजातीय छात्राओं के संदर्भ में सुरक्षा, आवासीय सुविधाएँ तथा सामाजिक जागरूकता जैसे आयाम भी महत्वपूर्ण हैं।

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उच्च शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि यह जनजातीय समाज में सामाजिक चेतना, नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम भी है। शिक्षित युवा अपने समुदाय में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक विकास के प्रेरक बनकर उभर रहे हैं। इसलिए आवश्यक है कि जनजातीय बहुल क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थानों का विस्तार किया जाए, छात्रवृत्ति योजनाओं को अधिक प्रभावी बनाया जाए, डिजिटल अवसंरचना को सुदृढ़ किया जाए, स्थानीय भाषाओं एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप शैक्षणिक सहयोग उपलब्ध कराया जाए तथा गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी उच्च शिक्षा सुनिश्चित की जाए। इससे झारखंड के आदिवासी समाज का समग्र विकास अधिक सुदृढ़ एवं सतत रूप से संभव हो सकेगा।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-05-2026
- **Accepted:** 27-06-2026
- **Published:** 30-06-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 1052-1056
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

कुमारी म, कुमारी श. उच्च शिक्षा में आदिवासियों की भागीदारी-झारखंड के विशेष संदर्भ में. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):1052-1056.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द : आदिवासी शिक्षा, उच्च शिक्षा, जनजातीय समाज, झारखंड, शैक्षिक विकास, सामाजिक परिवर्तन, छात्रवृत्ति, समावेशी शिक्षा, शैक्षिक अवसर, महिला शिक्षा, जनजातीय सशक्तिकरण, शिक्षा का अधिकार, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, शैक्षिक समानता, कौशल विकास, उच्च शिक्षण संस्थान, शैक्षिक अवसंरचना, सामाजिक न्याय, मानव संसाधन विकास, सतत विकास।

© 2026 माया कुमारी, डॉ. शारदा कुमारी .This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

शिक्षा मानव सभ्यता के विकास की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। यह व्यक्ति को ज्ञान, विवेक, नैतिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से संपन्न बनाती है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों में उच्च शिक्षा का स्थान विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यही वह स्तर है जहाँ व्यक्ति विशिष्ट ज्ञान, व्यावसायिक दक्षता तथा अनुसंधान क्षमता का विकास करता है। आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था में उच्च शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का माध्यम नहीं रही, बल्कि यह नवाचार, वैज्ञानिक अनुसंधान, सामाजिक नेतृत्व तथा आर्थिक प्रतिस्पर्धा का प्रमुख आधार बन चुकी है।

भारत का संविधान प्रत्येक नागरिक को समान अवसर प्रदान करने की अवधारणा पर आधारित है। अनुसूचित जनजातियों जैसे ऐतिहासिक रूप से वंचित समुदायों के शैक्षिक विकास के लिए संविधान में विशेष प्रावधान किए गए हैं। संविधान के अनुच्छेद 46 के अनुसार राज्य का दायित्व है कि वह अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक एवं आर्थिक हितों की विशेष रूप से रक्षा करे। इसी संवैधानिक दृष्टिकोण के आधार पर आरक्षण नीति, छात्रवृत्ति योजनाएँ, विशेष आवासीय विद्यालय, छात्रावास तथा अनेक कल्याणकारी कार्यक्रम प्रारंभ किए गए।

झारखंड भारत के प्रमुख जनजातीय राज्यों में से एक है। यहाँ संथाल, मुंडा, उराँव, हो, खड़िया, बिरहोर, असुर, पहाड़िया तथा अनेक अन्य जनजातीय समुदाय निवास करते हैं। इन समुदायों की अपनी विशिष्ट भाषा, संस्कृति, जीवन-पद्धति तथा पारंपरिक ज्ञान प्रणाली है। लंबे समय तक इनका जीवन जंगल, जल एवं जमीन पर आधारित रहा। औपनिवेशिक शासन, आर्थिक परिवर्तन तथा आधुनिक विकास प्रक्रियाओं के कारण इनके सामाजिक जीवन में व्यापक परिवर्तन हुए। शिक्षा इस परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरी।

स्वतंत्रता के प्रारंभिक दशकों में झारखंड के अधिकांश जनजातीय क्षेत्रों में उच्च शिक्षा की पहुँच अत्यंत सीमित थी। विद्यालयों की कमी, आर्थिक संसाधनों का अभाव, सामाजिक जागरूकता की कमी तथा उच्च शिक्षण संस्थानों की दूरी के कारण बहुत कम विद्यार्थी विश्वविद्यालय स्तर तक पहुँच पाते थे। विशेष रूप से जनजातीय बालिकाओं की स्थिति और अधिक चुनौतीपूर्ण थी। किंतु पिछले दो दशकों में इस स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। विश्वविद्यालयों की स्थापना, महाविद्यालयों का विस्तार, छात्रवृत्ति योजनाएँ तथा जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों ने उच्च शिक्षा के अवसरों को बढ़ाया है। आज झारखंड के अनेक आदिवासी विद्यार्थी चिकित्सा, अभियंत्रण, कृषि, प्रबंधन, विधि, शिक्षक शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान तथा शोध के विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन कर रहे हैं। अनेक युवा भारतीय प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा, विश्वविद्यालयों, न्यायपालिका तथा वैज्ञानिक संस्थानों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। यह परिवर्तन केवल व्यक्तिगत सफलता का संकेत नहीं है, बल्कि पूरे जनजातीय समाज की सामाजिक चेतना एवं बदलती आकांक्षाओं का प्रतीक है।

फिर भी यह कहना उचित नहीं होगा कि उच्च शिक्षा की समस्या पूरी तरह समाप्त हो गई है। वास्तविकता यह है कि जनजातीय विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा तक पहुँच अभी भी अनेक संरचनात्मक बाधाओं से प्रभावित है। आर्थिक अभाव, गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा का अभाव, भाषाई कठिनाइयाँ, डिजिटल असमानता, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के सीमित अवसर, छात्रावासों की कमी तथा ग्रामीण-शहरी असमानता जैसी समस्याएँ आज भी उच्च शिक्षा में समान भागीदारी के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से उच्च शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) का सबसे प्रभावी साधन है। शिक्षित व्यक्ति अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के साथ-साथ सामाजिक नेतृत्व, राजनीतिक सहभागिता, स्वास्थ्य जागरूकता तथा सामुदायिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब जनजातीय समाज का एक युवा विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करता है, तब उसका प्रभाव केवल उसी तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरा समुदाय शिक्षा के महत्व को नए दृष्टिकोण से देखने लगता है। यही कारण है कि आज अनेक जनजातीय परिवार अपनी आर्थिक सीमाओं के बावजूद अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए प्रयासरत हैं।

उच्च शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष सांस्कृतिक संरक्षण भी है। आज अनेक जनजातीय शोधार्थी अपनी भाषा, संस्कृति, लोकसाहित्य, पारंपरिक ज्ञान, पर्यावरणीय ज्ञान तथा इतिहास पर शोध कर रहे हैं। इससे न केवल जनजातीय विरासत का संरक्षण हो रहा है, बल्कि उसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान भी मिल रही है। विश्वविद्यालयों में जनजातीय अध्ययन केंद्रों की स्थापना तथा जनजातीय भाषाओं के अध्ययन ने इस दिशा में सकारात्मक योगदान दिया है।आदिवासी समाज की उच्च शिक्षा में भागीदारी का समग्र विश्लेषण करना है। इसमें उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति, उपलब्धियों, सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों, सरकारी प्रयासों तथा भविष्य की चुनौतियों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन इस तथ्य को स्थापित करने का प्रयास करता है कि यदि उच्च शिक्षा को जनजातीय समाज की वास्तविक आवश्यकताओं, स्थानीय संस्कृति तथा आधुनिक कौशल विकास के साथ जोड़ा जाए, तो यह सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकती है। झारखंड भारत का एक प्रमुख जनजातीय राज्य है, जहाँ अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या राज्य की कुल आबादी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। संथाल, मुंडा, उराँव, हो, खड़िया, बिरहोर, असुर, पहाड़िया, भूमिज, माल पहाड़िया तथा अन्य जनजातियाँ राज्य की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना का अभिन्न अंग हैं। इन समुदायों की अपनी विशिष्ट भाषाएँ, सांस्कृतिक परंपराएँ, सामाजिक संस्थाएँ तथा पारंपरिक ज्ञान प्रणाली है। लंबे समय तक इनका जीवन प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित रहा, जिसके कारण औपचारिक शिक्षा विशेषकर उच्च शिक्षा तक इनकी पहुँच सीमित रही। किंतु वर्तमान समय में यह स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है।

पिछले दो दशकों में झारखंड में उच्च शिक्षा का विस्तार अपेक्षाकृत तेज़ी से हुआ है। राज्य में नए विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, तकनीकी संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों, चिकित्सा महाविद्यालयों तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना से विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा के अवसर बढ़े हैं। पहले जहाँ अधिकांश विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए राज्य से बाहर जाना पड़ता था, वहीं अब राज्य के भीतर ही अनेक गुणवत्तापूर्ण संस्थान उपलब्ध हैं। इससे विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर एवं जनजातीय विद्यार्थियों को लाभ मिला है।

उच्च शिक्षा में जनजातीय विद्यार्थियों की भागीदारी में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण सामाजिक चेतना का विकास है। पहले अनेक परिवार प्राथमिक अथवा माध्यमिक शिक्षा को ही पर्याप्त मानते थे, किंतु वर्तमान समय में रोजगार, प्रतियोगी परीक्षाओं तथा व्यावसायिक अवसरों के बढ़ते महत्व ने उच्च शिक्षा के प्रति नई जागरूकता उत्पन्न

© 2026 माया कुमारी, डॉ. शारदा कुमारी .This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

की है। अब अनेक अभिभावक यह समझने लगे हैं कि केवल विद्यालयी शिक्षा पर्याप्त नहीं है, बल्कि प्रतिस्पर्धात्मक युग में स्नातक, स्नातकोत्तर तथा व्यावसायिक शिक्षा आवश्यक हो गई है।महिला शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिल रहा है। पहले उच्च शिक्षा में जनजातीय छात्राओं की भागीदारी अत्यंत सीमित थी, किंतु अब यह स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है। छात्रावास, छात्रवृत्ति, सुरक्षित परिवहन, महिला महाविद्यालयों का विस्तार तथा सामाजिक जागरूकता के कारण बड़ी संख्या में जनजातीय छात्राएँ विश्वविद्यालयों में प्रवेश ले रही हैं। वे चिकित्सा, नर्सिंग, शिक्षण, विधि, प्रबंधन, सामाजिक कार्य, विज्ञान तथा अनुसंधान के क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। यह परिवर्तन केवल महिला शिक्षा की उपलब्धि नहीं, बल्कि जनजातीय समाज में लैंगिक समानता की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है।

उच्च शिक्षा में भागीदारी को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं आर्थिक कारक

उच्च शिक्षा में आदिवासियों की भागीदारी अनेक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक कारकों से प्रभावित होती है। इनमें आर्थिक स्थिति सबसे महत्वपूर्ण है। झारखंड के अधिकांश जनजातीय परिवार कृषि, दिहाड़ी मजदूरी, वनोपज संग्रह तथा असंगठित रोजगार पर निर्भर हैं। इनकी आय अनिश्चित एवं सीमित होती है। ऐसे में उच्च शिक्षा से जुड़ा व्यय—जैसे प्रवेश शुल्क, पुस्तकें, छात्रावास, परिवहन, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी तथा डिजिटल संसाधनों की व्यवस्था—परिवारों के लिए चुनौती बन जाता है।

यद्यपि सरकार द्वारा छात्रवृत्ति एवं आर्थिक सहायता योजनाएँ संचालित की जाती हैं, फिर भी कई बार इनका लाभ समय पर प्राप्त नहीं हो पाता। छात्रवृत्ति वितरण में विलंब, प्रशासनिक प्रक्रियाओं की जटिलता तथा जानकारी के अभाव के कारण अनेक विद्यार्थी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हैं। इससे उनकी शिक्षा प्रभावित होती है और कुछ विद्यार्थी बीच में ही पढ़ाई छोड़ने के लिए विवश हो जाते हैं।परिवार की शैक्षिक पृष्ठभूमि भी उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिन परिवारों में माता-पिता शिक्षित होते हैं, वहाँ बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अधिक प्रेरणा, मार्गदर्शन तथा सहयोग मिलता है। इसके विपरीत प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थियों को अनेक अतिरिक्त कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उन्हें न केवल शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, बल्कि विश्वविद्यालयी वातावरण, प्रतियोगी परीक्षाओं तथा करियर विकल्पों के संबंध में भी पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं मिल पाता।

भाषा एवं शैक्षणिक वातावरण की भूमिका

उच्च शिक्षा में प्रवेश के बाद जनजातीय विद्यार्थियों के सामने भाषा एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर उभरती है। अधिकांश विद्यार्थी प्रारंभिक एवं माध्यमिक स्तर तक हिंदी अथवा स्थानीय भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं, जबकि विश्वविद्यालय स्तर पर अंग्रेज़ी का उपयोग अपेक्षाकृत अधिक होता है। विशेषकर विज्ञान, अभियंत्रण, चिकित्सा, प्रबंधन तथा तकनीकी विषयों में अंग्रेज़ी माध्यम के कारण विद्यार्थियों को अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ता है।

भाषाई कठिनाई केवल अध्ययन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, कक्षा में सहभागिता तथा प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं की तैयारी को भी प्रभावित करती है। इसलिए विश्वविद्यालयों में भाषा सहायता केंद्र, शैक्षणिक परामर्श तथा प्रारंभिक शैक्षणिक सहयोग कार्यक्रमों की आवश्यकता अनुभव की जाती है।

उच्च शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन

उच्च शिक्षा ने जनजातीय समाज में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को नई गति प्रदान की है। शिक्षित युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवैधानिक अधिकारों की समझ, लैंगिक समानता, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित हुई है। वे केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि अपने समुदाय में शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक जागरूकता के प्रसार में भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं।आज झारखंड के अनेक जनजातीय युवा प्रशासनिक सेवाओं, न्यायपालिका, विश्वविद्यालयों, चिकित्सा, अभियंत्रण, अनुसंधान, पत्रकारिता तथा निजी क्षेत्र में कार्यरत हैं। उनकी उपलब्धियाँ नई पीढ़ी के विद्यार्थियों को प्रेरित करती हैं। इससे समाज में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है तथा उच्च शिक्षा को सामाजिक सम्मान एवं प्रगति के साधन के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है।

शिक्षित युवाओं के माध्यम से जनजातीय समाज में सामाजिक कुरीतियों, अशिक्षा, बाल विवाह, लैंगिक भेदभाव तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के प्रति भी जागरूकता बढ़ी है। वे आधुनिक ज्ञान एवं पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार उच्च शिक्षा केवल व्यक्तिगत उपलब्धि न होकर सामुदायिक विकास का माध्यम बनती जा रही है।इसके अतिरिक्त अनेक जनजातीय शोधार्थी अपनी संस्कृति, भाषा, लोककला, पर्यावरणीय ज्ञान तथा इतिहास पर शोध कर रहे हैं। इससे एक ओर उनकी सांस्कृतिक पहचान सुदृढ़ हो रही है, वहीं दूसरी ओर भारतीय ज्ञान परंपरा भी समृद्ध हो रही है। विश्वविद्यालयों में जनजातीय अध्ययन केंद्रों की स्थापना तथा शोध परियोजनाओं ने इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।इन सभी तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि झारखंड में आदिवासियों की उच्च शिक्षा में भागीदारी निरंतर बढ़ रही है। यद्यपि चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं, फिर भी सामाजिक चेतना, सरकारी नीतियाँ, महिला शिक्षा का विस्तार तथा नई पीढ़ी की शैक्षिक आकांक्षाएँ भविष्य के लिए अत्यंत सकारात्मक संकेत प्रस्तुत करती हैं।

सरकारी प्रयास, नीतिगत हस्तक्षेप एवं भविष्य की संभावनाएँ

भारत में अनुसूचित जनजातियों की उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा समय-समय पर अनेक योजनाएँ एवं नीतियाँ लागू की गई हैं। इनका उद्देश्य केवल विद्यार्थियों का नामांकन बढ़ाना नहीं, बल्कि उन्हें उच्च शिक्षा पूरी करने, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में टिके रहने तथा सम्मानजनक रोजगार प्राप्त करने योग्य बनाना भी है। झारखंड जैसे जनजातीय बहुल राज्य में इन योजनाओं का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यहाँ बड़ी संख्या में विद्यार्थी सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से कमजोर पृष्ठभूमि से आते हैं।

जनजातीय विद्यार्थियों के लिए संचालित प्री-मैट्रिक एवं पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजनाएँ उच्च शिक्षा तक पहुँच का एक महत्वपूर्ण माध्यम रही हैं। इन योजनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को शुल्क, अध्ययन सामग्री, छात्रावास तथा अन्य शैक्षिक व्ययों के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। आर्थिक सहयोग मिलने से अनेक विद्यार्थी अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ने के बजाय स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक शिक्षा

© 2026 माया कुमारी, डॉ. शारदा कुमारी .This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

जारी रखने में सफल हुए हैं। यद्यपि इन योजनाओं का प्रभाव सकारात्मक रहा है, फिर भी समय पर छात्रवृत्ति वितरण तथा लाभार्थियों की पहचान की प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी एवं प्रभावी बनाए जाने की आवश्यकता है।

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों ने जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षिक यात्रा को नई दिशा प्रदान की है। इन विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, आधुनिक प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, खेल सुविधाएँ तथा अनुशासित शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराया जाता है। इन विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करने वाले अनेक विद्यार्थी आज देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थानों तथा व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त कर रहे हैं। यह जनजातीय शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भी जनजातीय शिक्षा के लिए नई संभावनाएँ प्रस्तुत की हैं। इस नीति में समावेशी शिक्षा, मातृभाषा आधारित प्रारंभिक शिक्षण, बहुविषयक अध्ययन, डिजिटल शिक्षा, कौशल विकास तथा अनुसंधान को विशेष महत्व दिया गया है। नीति का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी कौशल, नवाचार की क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त बनाना है। यदि इस नीति का प्रभावी क्रियान्वयन जनजातीय क्षेत्रों में किया जाए, तो उच्च शिक्षा में भागीदारी एवं गुणवत्ता दोनों में उल्लेखनीय सुधार संभव है।झारखंड सरकार द्वारा भी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सकारात्मक पहलें की गई हैं। राज्य के विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का विकास, छात्रावासों की स्थापना, छात्रवृत्ति योजनाओं का विस्तार, पुस्तकालयों का आधुनिकीकरण तथा डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित किए जा रहे हैं। इन प्रयासों ने उच्च शिक्षा के प्रति जनजातीय युवाओं का विश्वास बढ़ाया है।

उच्च शिक्षा एवं जनजातीय महिलाओं का सशक्तिकरण

उच्च शिक्षा ने जनजातीय महिलाओं के जीवन में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किया है। पहले जहाँ अधिकांश जनजातीय छात्राएँ माध्यमिक स्तर के बाद अपनी शिक्षा जारी नहीं रख पाती थीं, वहीं आज बड़ी संख्या में वे स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध स्तर की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। शिक्षा ने उनमें आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता तथा सामाजिक नेतृत्व का विकास किया है।

शिक्षित जनजातीय महिलाएँ आज शिक्षण, स्वास्थ्य, बैंकिंग, प्रशासन, न्यायपालिका, सामाजिक कार्य, अनुसंधान तथा उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में अपनी पहचान स्थापित कर रही हैं। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में भी सकारात्मक परिवर्तन आया है। परिवारों में अब बेटियों की शिक्षा को पहले की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जाने लगा है।

फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि ग्रामीण एवं दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में छात्राओं के समक्ष अनेक चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। सुरक्षित छात्रावास, परिवहन, डिजिटल संसाधन, स्वास्थ्य सुविधाएँ तथा सामाजिक समर्थन की उपलब्धता बढ़ाना आवश्यक है। यदि इन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाए, तो उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी और अधिक सुदृढ़ हो सकती है।

भविष्य की संभावनाएँ

आने वाले वर्षों में झारखंड के जनजातीय समाज में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक संभावनाएँ दिखाई देती हैं। नई शिक्षा नीति, डिजिटल प्रौद्योगिकी का विस्तार, ऑनलाइन शिक्षण, कौशल विकास कार्यक्रम, अनुसंधान आधारित शिक्षा तथा उद्योग–शिक्षा सहयोग जैसी पहलें जनजातीय युवाओं के लिए नए अवसर उत्पन्न कर सकती हैं।

उच्च शिक्षा को स्थानीय आवश्यकताओं से जोड़ना भी समय की आवश्यकता है। झारखंड की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए वानिकी, पर्यावरण अध्ययन, जनजातीय अध्ययन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, कृषि विज्ञान, खनन प्रबंधन, लोक संस्कृति, पारंपरिक चिकित्सा तथा स्थानीय उद्यमिता से संबंधित पाठ्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए। इससे शिक्षा अधिक रोजगारोन्मुख एवं समाजोपयोगी बन सकेगी।

डिजिटल शिक्षा का विस्तार भी भविष्य की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। जनजातीय क्षेत्रों में उच्च गति इंटरनेट, स्मार्ट कक्षाएँ, डिजिटल पुस्तकालय तथा ऑनलाइन अध्ययन सामग्री की उपलब्धता विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा से जोड़ सकती है। साथ ही स्थानीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री विकसित करने से जनजातीय विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता और अधिक बढ़ेगी।

उच्च शिक्षा में आदिवासियों की भागीदारी केवल शैक्षिक उपलब्धि का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समान अवसर, आर्थिक विकास तथा लोकतांत्रिक सशक्तिकरण का प्रश्न भी है। झारखंड के संदर्भ में यह स्पष्ट है कि पिछले वर्षों में जनजातीय समाज की उच्च शिक्षा में भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस परिवर्तन के पीछे संवैधानिक संरक्षण, आरक्षण नीति, छात्रवृत्ति योजनाएँ, सरकारी कार्यक्रम, सामाजिक जागरूकता तथा परिवारों की बदलती सोच की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।इसके बावजूद अनेक चुनौतियाँ अभी भी शेष हैं। आर्थिक विषमता, भौगोलिक दूरी, भाषाई बाधाएँ, डिजिटल असमानता, गुणवत्तापूर्ण विद्यालयी शिक्षा का अभाव तथा उच्च शिक्षा तक पहुँच में असमानता जैसी समस्याएँ अभी भी अनेक विद्यार्थियों को प्रभावित करती हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए बहुआयामी रणनीति अपनाना आवश्यक है।भविष्य में जनजातीय समाज के शैक्षिक विकास के लिए आवश्यक है कि सरकार, विश्वविद्यालय, स्थानीय समुदाय तथा नागरिक समाज मिलकर ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित करें जो गुणवत्तापूर्ण, समावेशी, रोजगारोन्मुख तथा सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील हो। स्थानीय भाषाओं, जनजातीय ज्ञान परंपराओं तथा आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के समन्वय से ही ऐसी उच्च शिक्षा व्यवस्था विकसित की जा सकती है जो जनजातीय युवाओं को आत्मनिर्भर, नवाचारी एवं सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक बनाए।यह कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा झारखंड के आदिवासी समाज के सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक संरक्षण तथा सतत विकास की सबसे महत्वपूर्ण आधारशिला है। यदि वर्तमान प्रयासों को निरंतरता एवं प्रभावशीलता के साथ आगे बढ़ाया जाए, तो निकट भविष्य में जनजातीय समाज राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा में और अधिक सशक्त रूप से अपनी भूमिका निभाने में सक्षम होगा।

संदर्भ सूची

1. आहूजा राम. भारतीय समाज. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स; 2021.

© 2026 माया कुमारी, डॉ. शारदा कुमारी .This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2. आहूजा राम. सामाजिक अनुसंधान. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स; 2020.
3. दुबे श्यामाचरण. भारतीय जनजातियाँ. नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास; 2019.
4. दुबे श्यामाचरण. मानव और संस्कृति. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2018.
5. सिंह योगेन्द्र. भारत में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स; 2017.
6. श्रीनिवास एमएन. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2016.
7. भारत सरकार. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय; 2020.
8. भारत सरकार. जनजातीय कार्य मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट. नई दिल्ली: जनजातीय कार्य मंत्रालय; 2023.
9. भारत सरकार. अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (AISHE) रिपोर्ट. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय; 2022.
10. भारत सरकार. यू-डाइस प्लस (UDISE+) रिपोर्ट. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय; 2023.
11. झारखंड सरकार. झारखंड आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24. राँची: योजना एवं विकास विभाग; 2024.
12. झारखंड सरकार. झारखंड सांख्यिकीय वार्षिकी. राँची: अर्थ एवं सांख्यिकी निदेशालय; 2023.
13. झारखंड जनजातीय कल्याण विभाग. जनजातीय शिक्षा एवं कल्याण प्रतिवेदन. राँची: झारखंड जनजातीय कल्याण विभाग; 2023.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Corresponding Author

माया कुमारी समाजशास्त्र विभाग, वाई.बी.एन. यूनिवर्सिटी, रांची में शोधार्थी हैं। उनकी शैक्षणिक एवं शोध रुचियाँ समाजशास्त्र, सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा तथा समकालीन सामाजिक मुद्दों के अध्ययन से संबंधित हैं। वे अपने शोध क्षेत्र में सक्रिय रूप से अकादमिक एवं अनुसंधान गतिविधियों में संलग्न हैं।

© 2026 माया कुमारी, डॉ. शारदा कुमारी .This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/